3 प्राथमिक उपचार

समुदाय की आपदा पूर्व तैयारी और
आपदा से बचाव हेतु परामर्श पुस्तिका

राम सेवक की सेवा

EUROPEAN COMMISSION
Humanitarian Aid

Malteser International
Order of Malta Worldwide Relief

Sahbhagi Shikshan Kendra
A Centre for Participatory Learning

समुदाय की आपदा पूर्व तैयारी और
आपदा से बचाव हेतु परामर्श पुस्तिका

3

राम सेवक की सेवा

प्राथमिक उपचार

स्थिति आंकलन

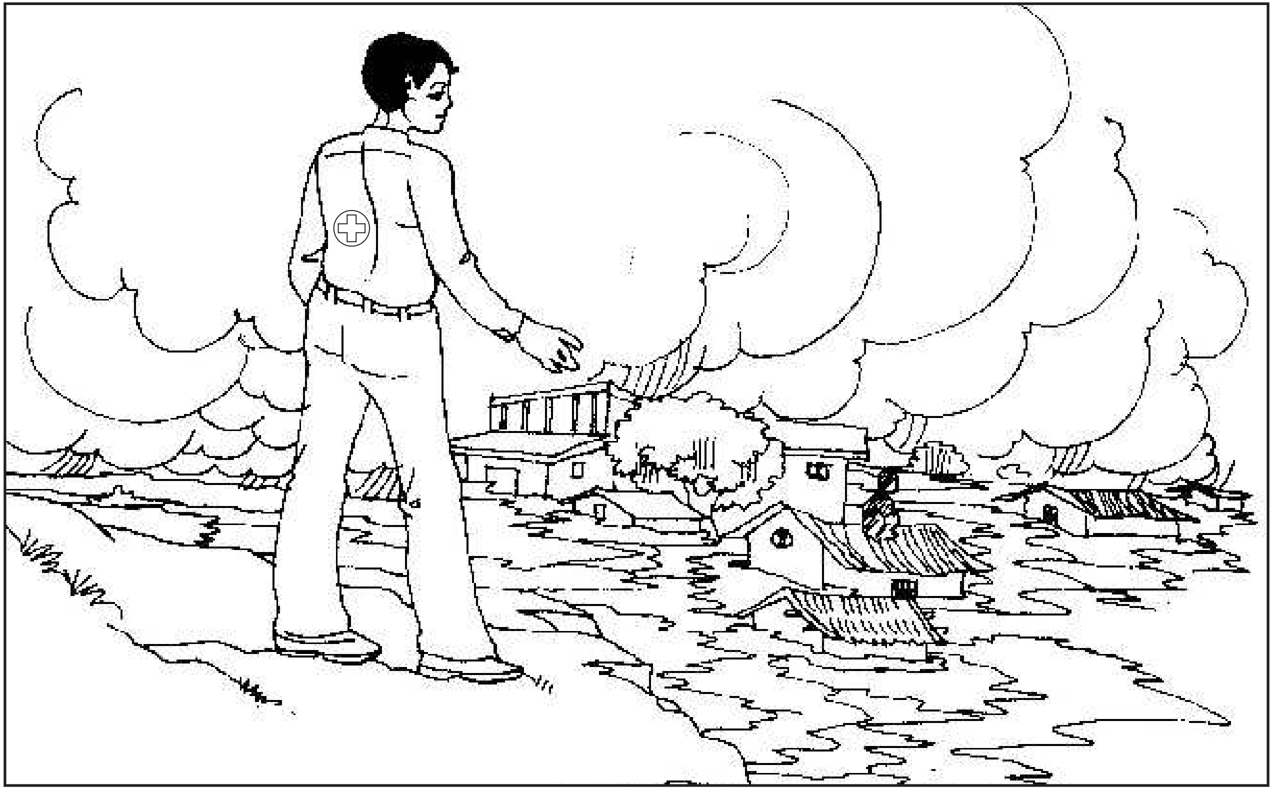

राम सेवक की सेवा
प्राथमिक उपचार

राहतपुरवा और दुखनपुरवा दो पड़ोसी गाँव हैं, जो मगरा नदी के किनारे बसे हैं। यह नदी इन दोनों गाँवों के साथ इलाके के कई गाँव में हर साल बाढ़ लाती है। साथ ही नदी का हर साल अपना रास्ता बदलने का भी स्वभाव है। इस कारण कभी बांयीं तरफ तो कभी दांयी तरफ की खेती योग्य जमीन कट जाती है। करीब बीस साल पहले मगरा नदी पर एक तटबंध बनाया गया था। उससे पहले ये नदी बहुत बड़े इलाके में बाढ़ लाती थी। राहतपुरवा और दुखनपुरवा दोनों गाँवों के एक तरफ तटबंध है और दूसरी तरफ नदी या यूँ कहें कि दोनों गाँव नदी और तटबंध के बीच पड़ते हैं। इन दोनों गाँवों को कहानी के लिए इसलिए चुना गया, क्योंकि दोनों ही गांवों में आपदा बचाव और प्रबंधन के बारे में जानकारी देने वाली एक गैर सरकारी संस्था ने सम्पर्क किया था। राहतपुरवा के लोगों ने संस्था की बातों को सुना, समझा और अमल में लाया जबकि दुखनपुरवा के लोगों ने संस्था की बातों को हवा में उड़ा दिया। इस कहानी में हम जानेंगे कि बाढ़ आने पर दोनों गांवों में क्या हुआ। राहतपुरवा में गैर सरकारी संस्था की मदद से पांच विषयों पर लोगों के बीच समझ बनी और इन विषयों पर कार्यदलों का भी गठन किया गया। संस्था द्वारा कार्यदलों के सभी सदस्यों को आपदा प्रबंधन से जुड़े पाँच विषयों (पूर्व चेतावनी, खोज एवं बचाव, प्राथमिक चिकित्सा, शुद्ध पेयजल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य

जाँच सूची

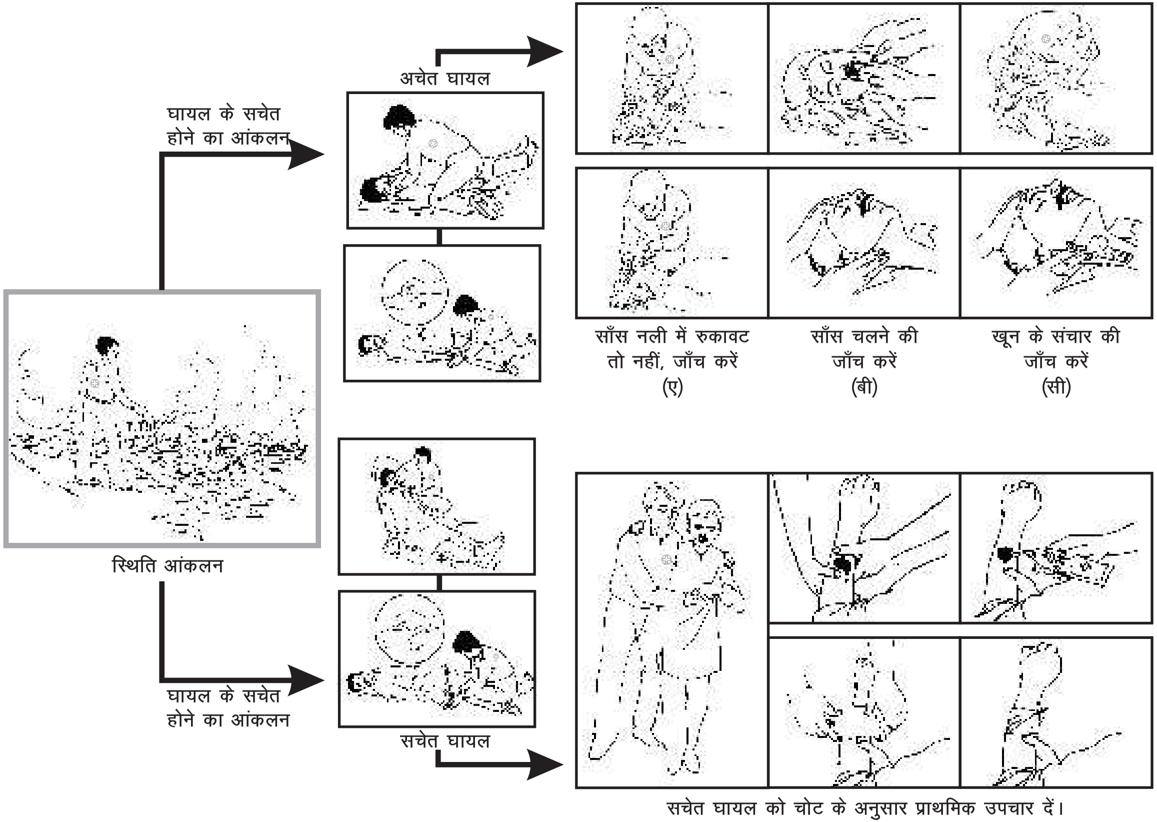
स्थिति आंकलन
घायल के सचेत होने का आंकलन
अचेत घायल
साँस नली में रुकावट तो नहीं, जाँच करें (ए)
साँस चलने की जाँच करें (बी)
खून के संचार की जाँच करें (सी)
घायल के सचेत होने का आंकलन
सचेत घायल
सचेत घायल को चोट के अनुसार प्राथमिक उपचार दें।

तथा सामाजिक जुड़ाव) पर अलग-अलग प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षणोपरांत कार्यदल के इन सदस्यों ने संस्था द्वारा बताए गए कार्ययोजना के अनुसार आपदा प्रबंधन की दिशा में बाकी कार्यदलों के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

इस पुस्तिका में हम लोग प्राथमिक उपचार कार्यदल के बारे में जानेंगे। राहतपुरवा प्राथमिक उपचार कार्यदल के एक सदस्य का नाम श्री राम सेवक है, इस कार्यदल में कुल नौ सदस्य हैं।

गैर सरकारी संस्था ने राहतपुरवा गाँव के लोगों के साथ कई बैठक की, उनको प्राथमिक उपचार की उपयोगिता और महत्व के बारे में बताया। गाँव वालों ने संस्था की मदद से एक "राहतपुरवा विकास समिति" का गठन किया, इस समिति के रामसेवक को प्राथमिक उपचार कार्यदल में लिया गया और उसे प्राथमिक उपचार देने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। जबकि दूसरी तरफ दुखनपुरवा में लोगों ने संस्था के लोगों को बात करने का समय नहीं दिया। गैर सरकारी संस्था द्वारा विभिन्न पंचायतों के प्राथमिक उपचार' कार्यदल के सदस्यों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें रामसेवक भी शामिल हुआ।

रामसेवक प्रशिक्षण पाने के बाद राहतपुरवा के घर-घर गया और लोगों को इकट्ठा करके बताया कि चोट लगने पर प्राथमिक चिकित्सा कैसे देना चाहिए, डूबने से बचाए गए व्यक्ति के सचेत होने की जाँच कैसे करें, यह कैसे जांचे कि सांस की नली में

प्राथमिक उपचार बॉक्स

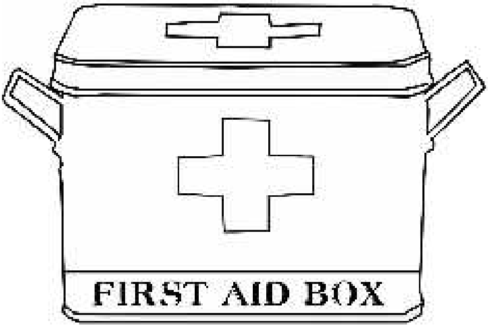

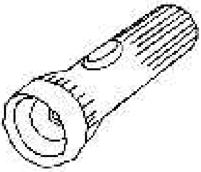

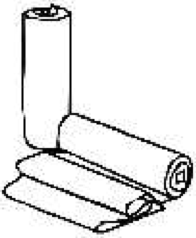

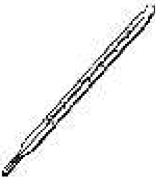

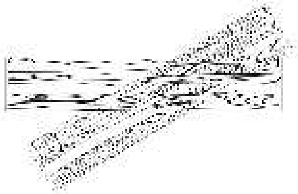

मरहम पट्टी करना

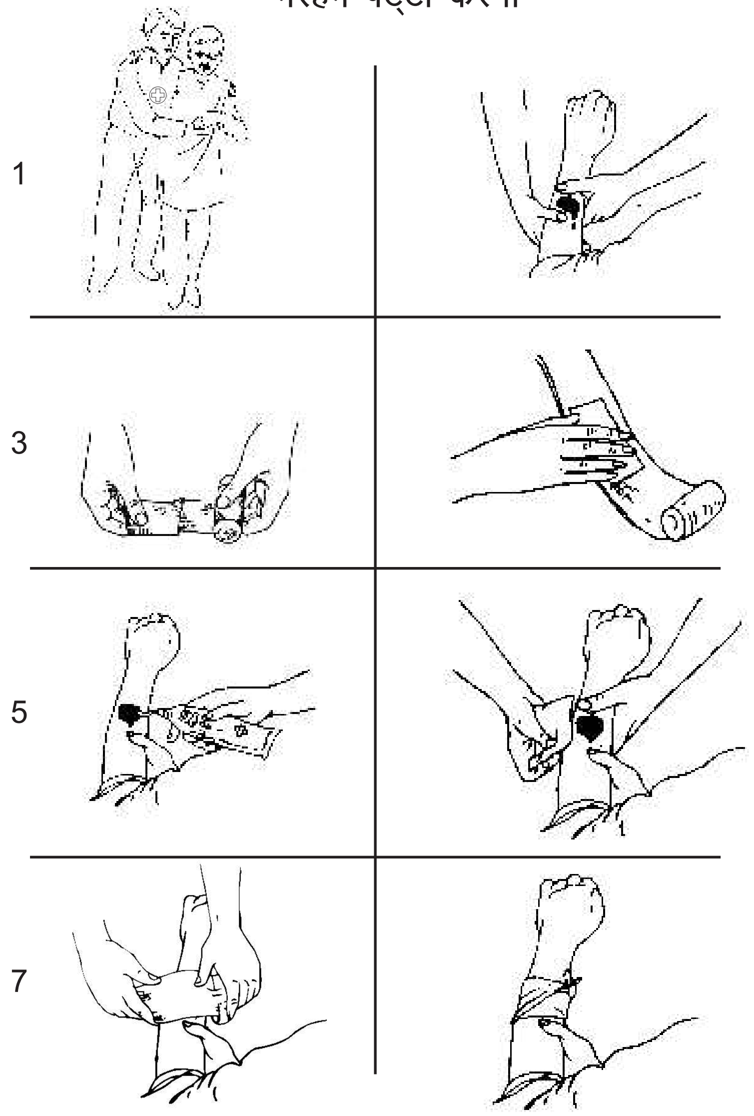

प्रधान से सम्पर्क

आशा बहू व आंगनबाड़ी कार्यकत्री से सम्पर्क

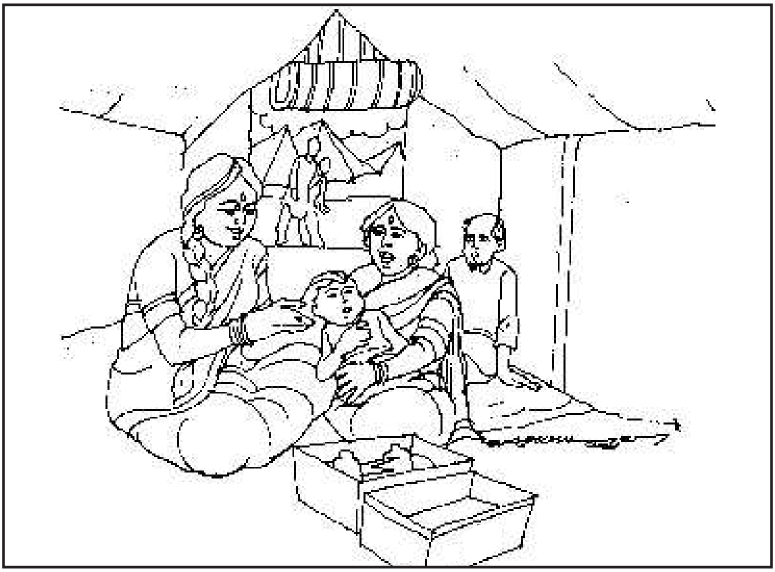

रूकावट तो नहीं सांस ठीक से आ रही है या नहीं और नब्ज चल रही है या नहीं।

एक बार जब रामसेवक राहतपुरवा के दौरे पर था तभी राजकुमारी के बेटे के हाथ में चोट लग गयी। रामसेवक ने राजकुमारी के घर पहुंचकर तुरन्त उसके बेटे का प्राथमिक उपचार किया। कुछ दिनों बाद पता चला कि राजकुमारी का बेटा अब पूरी तरह ठीक है।

रामसेवक बीच-बीच में प्रधान से मिलता रहा और अपने "जानकारी रजिस्टर" में राहतपुरवा की "आशा बहू" और आंगनबाड़ी कार्यकत्री का नाम, पता, टेलीफोन नम्बर दर्ज किया। साथ ही रामसेवक ने राहतपुरवा के उपस्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक-स्वास्थ्य केन्द्र, और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में क्रमशः काम करने वाली ए.एन.एम., चिकित्साधिकारियों और पैरा-मेडिकल कर्मचारियों के नाम पता और टेलीफोन नम्बर अपने "जानकारी रजिस्टर" में नोट कर लिए, ताकि आपदा के समय जरूरत पड़ने पर उनकी मदद ली जा सके।

रामसेवक ने राहतपुरवा में अपने दौरे के समय कार्यदल के अन्य सदस्यों और गाँव वालों की सहमति से राहतपुरवा और तटबंध पर प्राथमिक चिकित्सा के लिए जगह चिन्हित कर ली। अब रामसेवक और कार्यदल के सदस्य राहतपुरवा में चिन्हित जगह पर ही अपनी बैठकें करते हैं।

रामसेवक और कार्यदल के सदस्य अपनी हर बैठकों के दौरान प्राथमिक चिकित्सा स्थल पर रखे फर्स्ट-एड बॉक्स की जांच करते

सांप व बिच्छू काटने पर प्राथमिक उपचार

1
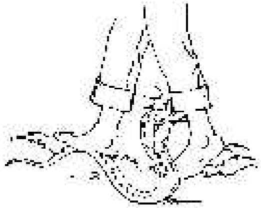

2

3
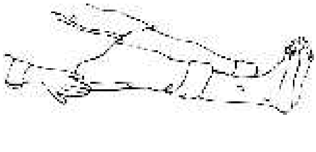

4

5

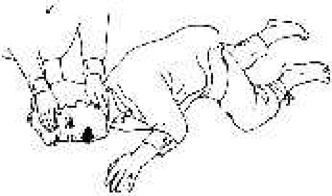
6

7

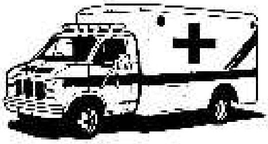
8

हैं और इस बात की जानकारी रखते हैं कि दवाइयाँ, पट्टी, ड्रेसिंग आदि सामान है या नहीं। जो सामान खत्म हो गया है उसकी सूची भी बनाते हैं।

रामसेवक और प्राथमिक उपचार कार्यदल ने सावन का महीना शुरू होने से पन्द्रह दिन पहले राहतपुरवा में एक सघन बैठक की और गाँव वालों को एक बार फिर प्राथमिक उपचार के महत्व के बारे में बताया और बाढ़ के दौरान ध्यान रखने योग्य बातों को याद दिलाया, जैसे- चोट लगने पर तुरन्त उसका उपचार करना, बिना किसी प्रकार के भेदभाव के दूसरों की मदद करना। समुदाय में बैठक के दूसरे दिन रामसेवक ने कार्यदल के कुछ सदस्यों के साथ उपस्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक-स्वास्थ्य केन्द्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का पुनः दौरा किया। ए.एन.एम. और चिकित्सा अधिकारियों से मुलाकात की अपनी तैयारियों के बारे में बताया और सरकार की तैयारियों के बारे में भी जानने की कोशिश की। वहीं दूसरी तरफ दुखनपुरवा में आपदा (बाढ़) से निपटने की कोई सामूहिक तैयारी नहीं की जा रही थी, सभी अपने-अपने काम में व्यस्त थे।

अगस्त माह में जब मौसम की पहली बाढ़ आयी तब राहतपुरवा में गाँव वालों और प्राथमिक उपचार कार्यदल की सतर्कता के कारण जिनको भी चोट लगी थी या साँप ने काटा था, उचित उपचार के कारण कोई विशेष नुकसान नहीं हुआ था। जबकि गाँव वालों से पता चला कि दुखनपुरवा में साँप काटने से एक व्यक्ति की मौत हो गयी है।

घाव व खून बहने पर प्राथमिक उपचार

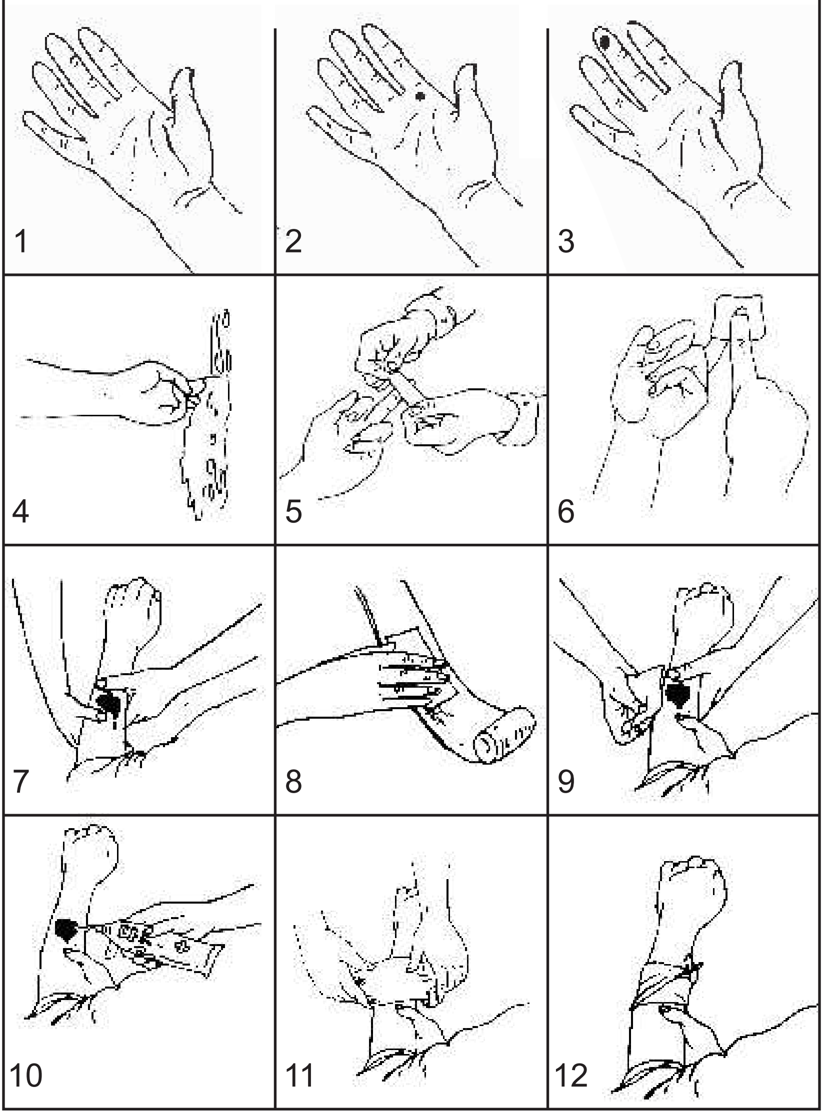

अगस्त माह के अन्त में एक बार फिर बाढ़ आयी, इस बार बाढ़ गम्भीर थी और गाँव वालों को गाँव छोड़कर तटबन्ध पर जाना पड़ा और इस बार राम सेवक और प्राथमिक उपचार कार्यदल के चार सदस्य पहले से ही तटबन्ध पर बने अस्थाई प्राथमिक उपचार स्थल पर मौजूद थे, जबकि तीन सदस्य राहतपुरवा में बचे हुए लोगों की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं का ध्यान रख रहे थे। जबकि दुखनपुरवा के लोग भी किसी तरह तटबंध पर पहुंचे थे और स्वास्थ्य सेवाओं और सुविधाओं की जानकारी न होने के कारण मुश्किलों का सामना कर रहे थे।

प्राथमिक उपचार कार्यदल ने सभी जरूरतमंदों को बिना किसी भी प्रकार के अलगाव के प्राथमिक उपचार दिया। साथ ही किस-किस को कौन सी समस्या के लिए प्राथमिक उपचार दिया गया यह जानकारी एक रजिस्टर में दर्ज कर ली गयी।

बाढ़ के दौरान जब राहतपुरवा के गाँव वाले तटबंध पर रह रहे थे, रामसेवक और प्राथमिक उपचार कार्यदल के सदस्य अन्य कार्यदलों से रोज मिलते रहे ताकि सभी को एक-दूसरे की योजना और कार्यवाही की जानकारी रहे।

बाढ़ से पहले, बाढ़ के बाद "राहतपुरवा विकास समिति" की बैठकों में भी राम सेवक या प्राथमिक उपचार कार्यदल कोई न कोई सदस्य जरूर भाग लेता रहा ताकि "प्राथमिक उपचार कार्य दल" की आवश्यकताओं और उनके प्रयासों की जानकारी पुरवा के सभी लोगों को मिलती रहे।

डूबने पर प्राथमिक उपचार

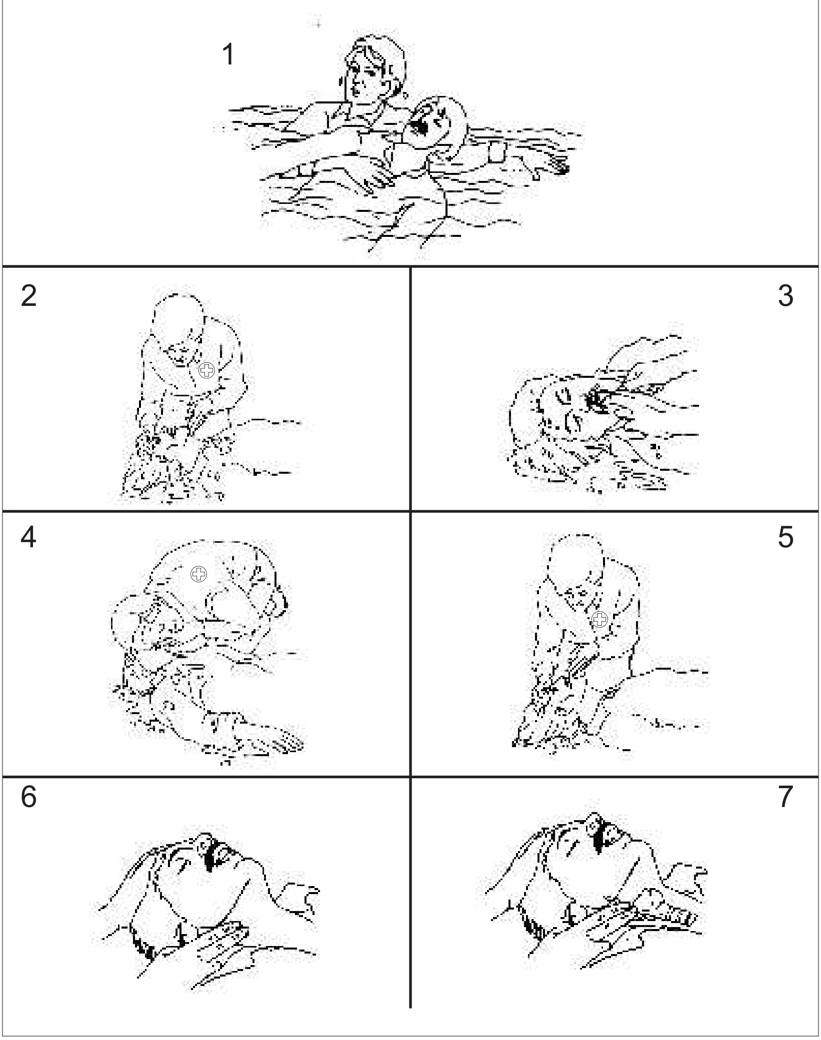

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर प्राथमिक चिकित्सा के लिए बैठक

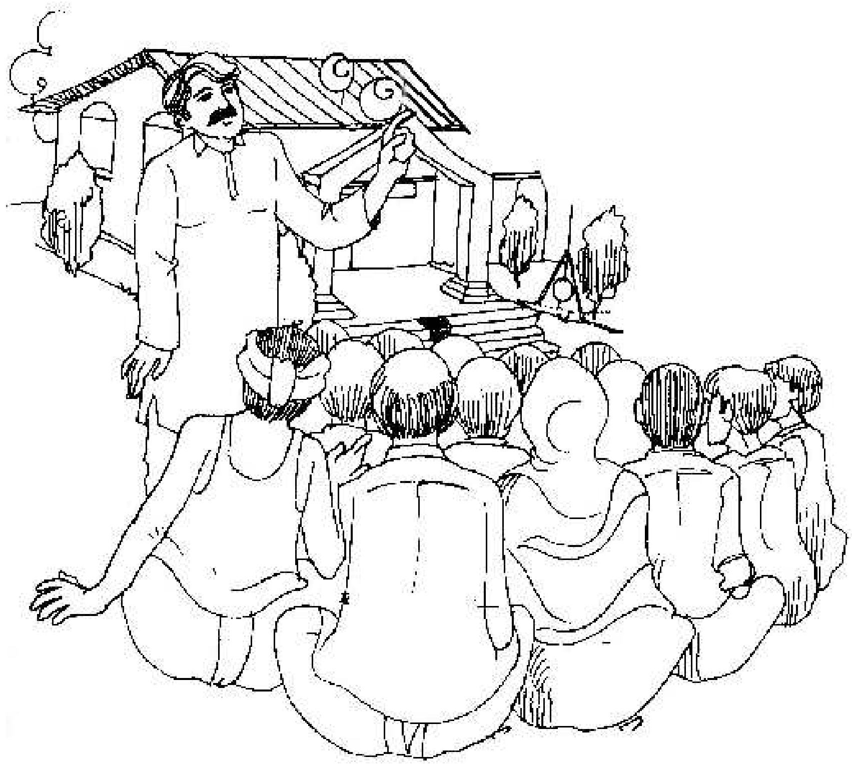

बाढ़ के बाद प्राथमिक उपचार कार्यदल की एक बैठक बुलायी गयी जिसमें बाढ़ के दौरान कार्यदल के काम की समीक्षा की गयी और आगे के महीनों के लिए कार्यदल ने एक कार्ययोजना बनायी ।

बाढ़ के बाद रामसेवक और कार्यदल के साथी दुखनपुरवा में रहने वाले अपने एक परिचित के बुलाने पर वहां गए तो पता चला कि बाढ़ में सांप के काटने से दो व्यक्ति और तीन जानवरों की मौत हो गयी, लगभग सभी घरों में कोई न कोई बीमार है किसी को जुकाम-खांसी, बुखार तो किसी को चर्म रोग या किसी की चोट बारिश के दौरान सड़ गयी है। यह सब देखने के बाद रामसेवक और साथियों को एहसास हुआ कि गैर सरकारी संस्था की बात मानकर प्राथमिक उपचार कार्यदल बनाने के कारण इस बार बाढ़ के बाद उनके राहतपुरवा में बीमार पड़ने वालों की संख्या बहुत कम रही वरना हर साल जो दुखनपुरवा का हाल है वही उनके गाँव का भी होता था।

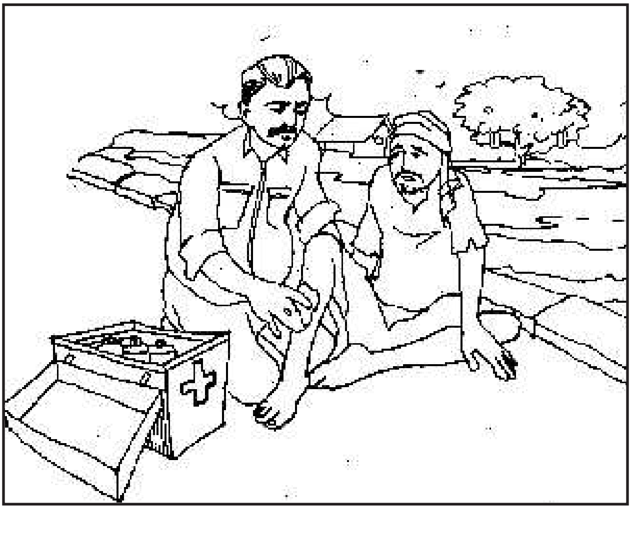

सहभागी शिक्षण केन्द्र के बारे में....

सहभागी शिक्षण केन्द्र सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के अन्तर्गत पंजीकृत नागर समाज संगठन है जो आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़े समुदायों के सशक्तीकरण के लिए समर्पित है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए केन्द्र अच्छे अभिशासन हेतु जन-सहभागिता जगाने के कार्यों में संलग्न है। यह संस्थान मुख्यतः उत्तर प्रदेश, बिहार व झारखण्ड में कार्यरत है। सामाजिक परिवर्तन के कार्यक्रमों में ग्राम्य स्तर/ग्रासरूट पर कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों एवं नागर समाज के अन्य संगठनों को आवश्यक शैक्षणिक सहयोग प्रदान कर उन संस्थाओं व संगठनों की क्षमतावृद्धि करना इस केन्द्र का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

इस उद्देश्य पूर्ति हेतु केन्द्र द्वारा ग्राम्य स्तर पर कार्यरत संस्थाओं के मुख्य कार्यकारी, मध्य स्तर एवं क्षेत्र स्तरीय कार्यकर्ताओं के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन एवं संचालन किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से महिला नेतृत्व विकास प्रशिक्षण, प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण, संस्था प्रबन्धन, लेखांकन एवं वित्तीय प्रबन्धन, नेतृत्व विकास प्रशिक्षण, पी.आर.ए. एवं माइक्रोप्लानिंग आदि प्रमुख हैं। साथ ही केन्द्र द्वारा कार्यनीतिक नियोजन,परिणाम आधारित कार्यक्रम नियोजन व प्रबंधन तथा आन्तरिक संगठन प्रबन्धन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर लघु अवधीय प्रशिक्षण व कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

73वें एवं 74वें संविधान संशोधन के बाद केन्द्र द्वारा स्थानीय स्वशासन को प्रभावी व कारगर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास एवं प्रयोग किये जा रहे हैं। इस दृष्टि से केन्द्र द्वारा स्थानीय स्वशासन के सशक्तीकरण हेतु राज्य व जिला स्तरीय संदर्भ केन्द्रों की स्थापना की गयी है।

स्थानीय स्वशासन के मुद्दे पर केन्द्र द्वारा अनेक अभिनव प्रयास किये जा रहे हैं। इसमें विभिन्न कर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ साथ जानकारी का आदान-प्रदान, स्थानीय स्वशासन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन, सम्बन्धित घटकों के साथ अन्तर्सम्बन्ध निर्माण एवं विभिन्न नीतिगत मुद्दों पर पैरवी का कार्य किया जा रहा है। जन केन्द्रित विकास की दशा एवं दिशा को सशक्त एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से केन्द्र 10 जनपदों में नगरीय एवं ग्रामीण स्वशासन इकाईयों के साथ मिलकर कार्य कर रहा है।

इसके अतिरिक्त विकास में संलग्न विभिन्न कर्ताओं को अनुश्रवण मूल्यांकन, संस्थागत विकास, टीम बिल्डिंग, शोध एवं अध्ययन, प्रक्रिया दस्तावेजीकरण आदि के संदर्भ में केन्द्र द्वारा परामर्शी सेवायें भी प्रदान की जाती हैं। सहभागी शिक्षण केन्द्र ने उत्तर प्रदेश के चार क्षेत्रों में अपने को स्थानीय स्वशासन के साथ विभिन्न मुद्दों पर जैसे- सामाजिक अंकेक्षण, पलायन, आपदा प्रबंधन, बालिका शिक्षा व वन अधिकार आदि के क्षेत्रों में नवाचार प्रयोग किया है। इन प्रयोगों से निकले अनुभवों को प्रशिक्षण और नीतिगत पैरवी हेतु उपयोग किया जाता है।

सहभागी शिक्षण केन्द्र

सहभागी रोड, छठा मील, पुलिस फायर स्टेशन के पीछे

सीतापुर रोड, लखनऊ-227 208 (उ.प्र.)

फोन : (0522) 6980124, 9452293783, 9616231499

9935302536, 9935321481

ईमेल: info@sahbhagi.org वेबसाइट: www.sahbhagi.org